शुक्रवार, 1 जुलाई 2016

लोकमत समाचार

सहयोगियों के साथ सहयोगियों के लिए नेतृत्व

गिरीश्वर मिश्र
कुलपति, महात्मा गांधी
अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

आज शैक्षिक, प्रशासनिक और औद्योगिक हर तरह के संगठनों में अपने अधीन काम करने वाले सहयोगियों से काम कराने को लेकर अधिकारियों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है. किसी समर्पित, चुस्त-दुरुस्त और लक्ष्योन्मुखी प्रशासक या अधिकारी के लिए यह काम टेढ़ी खीर सा साबित होता जा रहा है. काम सिर्फ यांत्रिक ढंग से की जाने वाली क्रिया नहीं है. वैसे कई लोग काम को बड़े ही यांत्रिक ढंग से, जैसे-तैसे किसी तरह पूरा कर लेते हैं. वे मन तथा बुद्धि का उपयोग किए बिना किसी तरह से खानापूरी के तौर पर काम के नाम पर रस्म अदायगी कर देते हैं (वर्क टू रूल का पालन करते हैं!). ऐसी खानापूरी से न काम ही समय पर हो पाता है और न उसकी गुणवत्ता ही सुनिश्चित हो पाती है.

आजकल अधिकारियों की यह आम शिकायत होती जा रही है कि 'लोग मन लगा कर काम नहीं करते', सिर्फ 'टाइम पास करते हैं' आदि-आदि. वैसे तो इस तरह की स्थिति के कई कारण हो सकते हैं जो व्यक्तिगत भी हो सकते हैं और व्यवस्था से जुड़े भी. निजी कारण जैसे जरूरी कौशल का अभाव, काम का मनमाफिक न होना या फिर कार्य स्थल की मुश्किलें और काम की दुखी करने वाली शर्तें वगैरह. पर काम को ठीक तरह से अंजाम देने से जुड़ा एक महत्वपूर्ण पक्ष है काम के मौके पर मिलने वाले नेतृत्व की शैली. काम कराने के लिए जिम्मेदार व्यक्ति अपने मातहत लोगों को किस तरह अपने साथ ले कर चलता है यह बेहद महत्वपूर्ण होता है, बड़ा ही क्रिटिकल है. हम सब रोबोट या यंत्र मानव तो नहीं हैं. हमारे जीवन में स्वाभिमान, भाव, संवेग, सामाजिक छवि आदि की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है. एक जीता-जागता आदमी विचारों, भावों, निजी इतिहास और भविष्य की सोच का पुलिंदा होता है. उसकी तमन्ना, संशय और विश्वास भी होते हैं. उसकी अपनी आशाएं और आकांक्षाएं भी होती हैं. अगर संस्था के साथ इन चीजों का मेल नहीं खाता है तो गाड़ी चलती नहीं रुक जाती है.

अक्सर अपने सहयोगियों के साथ पेश आते हुए हमारी नजर लोगों की कमियों पर ज्यादा जाती है और उन्हें सुधारने का बीड़ा उठा लेते हैं. इस चक्कर में अनेक मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं. पर कोई भी आदमी अपनी गलती की ओर ध्यान नहीं देता है. वह अपने को हमेशा अच्छा, भला और योग्य रूप में ही देखना चाहता है. सच तो यह है कि अपने बारे में कोई भी यथार्थवादी या सच्चा नहीं होता. खुद को सकारात्मक ढंग से देखना एक सर्वजनसुलभ और स्वाभाविक कमजोरी है जिसकी ओर हम ध्यान नहीं देते.